International Journal of Emerging Voices in Education
©PIJMS | Volume 1 | Issue 4 | December 2025 | ISSN: 3107-958X (Online)
Available online at: https://ijeve.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijeve.v1i4.16

बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि स्तर का अध्ययन

अशोक सिंह यादव[1], प्रो0 आभा शर्मा[2],

[1]शोधार्थी, शिक्षासंकाय, वी.एस.एस.डी.पी.जी कॉलेज, कानपुर
[2]शोध निर्देशिका, शिक्षासंकाय, प्रोफेसर, वी.एस.एस.डी.पी.जी कॉलेज, कानपुर
[1]Email Id: ay441076@gmail.com

Received: 05 December 2025 | **Accepted:** 21 December 2025 | **Published:** 30 December 2025

सारांश

पिछले कुछ दशकों में शिक्षक शिक्षा के प्रतिमान में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है, जो केवल संज्ञानात्मक और शैक्षणिक फोकस से हटकर भावात्मक और मनोवैज्ञानिक दक्षताओं के समावेश की ओर बढ़ा है। इस बदलाव के केंद्र में सांवेगिक बुद्धि की अवधारणा है, जो शिक्षण प्रभावकारिता, कक्षा प्रबंधन और छात्र जुड़ाव के एक महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता के रूप में उभरी है। यह शोध रिपोर्ट चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड.) प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि स्तरों की व्यापक जांच प्रस्तुत करती है। प्रो. रुकैया जैनुद्दीन और डॉ. अंजुम अहमद द्वारा विकसित मानकीकृत इमोशनल इंटेलिजेंस टेस्ट (ईआईटी–जेडए) का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन 100 प्रशिक्षुओं (50 पुरुष और 50 महिलाएं) के एक स्तरीकृत नमूने का परीक्षण करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध एक निजी संस्थान के विशिष्ट सामाजिक–शैक्षिक संदर्भ में सेवा–पूर्व शिक्षकों का मनोवैज्ञानिक प्रोफ़ाइल तैयार करना है। विश्लेषण सांवेगिक बुद्धि के पांच मुख्य आयामों की पड़ताल करता है– आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, अभिप्रेरणा, समानुभूति और सामाजिक कौशल। कठोर सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से, रिपोर्ट इस समूह के भीतर लैंगिक अंतर और आयामी शक्तियों की जांच करती है। निष्कर्ष समाजीकरण और पेशेवर प्रशिक्षण की एक जटिल परस्पर क्रिया का सुझाव देते हैं, जहां महिला प्रशिक्षु समानुभूति आयामों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण लाभ प्रदर्शित करती हैं, जबकि पुरुष प्रशिक्षु आत्म–नियमन में विशिष्ट पैटर्न दिखाते हैं। रिपोर्ट चरक इंस्टीट्यूट के पाठ्यक्रम डेवलपर्स और प्रशासकों के लिए समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लक्षित शैक्षिक निहितार्थों के साथ समाप्त होती है।

कीवर्ड: *बी.एड. प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि स्तरों की व्यापक जांच, आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, अभिप्रेरणा, समानुभूति और सामाजिक कौशल*

प्रस्तावना

शिक्षा मूल रूप से एक पारस्परिक प्रयास है। कक्षा केवल सूचनाओं के आदान–प्रदान का स्थान नहीं है, बल्कि एक गतिशील भावनात्मक क्षेत्र है जहां शिक्षक की मनोवैज्ञानिक स्थिति का सीधा प्रभाव छात्र के सीखने के परिणामों पर पड़ता है। समकालीन भारतीय संदर्भ में, शिक्षक की भूमिका का विस्तार हुआ है, जिसमें अब वह एक संरक्षक, परामर्शदाता और सामाजिक इंजीनियर भी है। पारंपरिक बुद्धि लब्धि और अकादमिक दक्षता लंबे समय से शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए आधार रही है, लेकिन अनुभवजन्य साक्ष्य तेजी से सांवेगिक बुद्धि को एक सक्षम शिक्षक और एक असाधारण शिक्षक के बीच के अंतर के रूप में इंगित कर रहे हैं (मेयर और सालोवे, 1997, सिंह और सिंह, 2008)।

सांवेगिक बुद्धि की अवधारणा

सांवेगिक बुद्धि का तात्पर्य अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, खुद को प्रेरित करने, और अपने व अपने रिश्तों में भावनाओं को अच्छी तरह से प्रबंधित करने की क्षमता से है (गोलेमैन, 1995)।

इस अध्ययन का सैद्धांतिक ढांचा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की प्रो. रुकैया जैनुद्दीन और डॉ. अंजुम अहमद द्वारा प्रस्तावित मॉडल पर आधारित है, जो विशेष रूप से भारतीय जनसांख्यिकी के लिए अनुकूलित है। उनका मॉडल, जो ईआईटी–जेडए में समाहित है, पांच महत्वपूर्ण आयामों की पहचान करता है (जैनुद्दीन और अहमद, 2008)–

1 **आत्म–जागरूकता:–**भावना को घटित होते समय पहचानने की क्षमता। एक बी.एड. प्रशिक्षु के लिए, इसका अर्थ है चिंतनशील अभ्यास–यह समझना कि कोई छात्र जिज्ञासा के बजाय क्रोध क्यों पैदा करता है।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

2 **आत्म–नियमनः**–विघटनकारी आवेगों और मूड को प्रबंधित करने की क्षमता। यह भावनात्मक प्रणाली का ब्रेक पेडल है, जो आक्रामकता का सहारा लिए बिना कक्षा अनुशासन बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

3 **अभिप्रेरणाः**–पैसे या रुतबे से परे कारणों के लिए काम करने का जुनूनय ऊर्जा और दृढ़ता के साथ लक्ष्यों का पीछा करने की प्रवृत्ति।

4 **समानुभूतिः**–दूसरे लोगों की भावनात्मक संरचना को समझने की क्षमता। यह छात्र–केंद्रित शिक्षाशास्त्र का मूल है।

5 **सामाजिक कौशलः**–रिश्तों को प्रबंधित करने और नेटवर्क बनाने में दक्षता। यह आयाम एक शिक्षक की कक्षा का नेतृत्व करने और अभिभावकों के साथ बातचीत करने की क्षमता को निर्धारित करता है।

अध्ययन का संदर्भः– उत्तर प्रदेश में शिक्षक शिक्षा

भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य के रूप में, उत्तर प्रदेश शिक्षक शिक्षा में चुनौतियों और अवसरों का एक अनूठा सेट प्रस्तुत करता है। राज्य में निजी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि देखी गई है, जिसमें चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, लखनऊ एक प्रमुख उदाहरण है।

बी.एड. पाठ्यक्रम, हालांकि राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद और लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा मानकीकृत है, अक्सर शैक्षणिक तकनीकों–पाठ योजना और सूक्ष्म शिक्षण–पर भारी ध्यान केंद्रित करता है। हालांकि, प्रशिक्षु की मनोवैज्ञानिक तैयारी अक्सर पीछे रह जाती है।

समस्या का कथन

उत्तरी भारत में विशिष्ट संस्थागत संदर्भों में बी.एड. प्रशिक्षुओं पर केंद्रित स्थानीय शोध की कमी है। यह अध्ययन विशेष रूप से चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, लखनऊ को लक्षित करता है। समस्या को इस प्रकार कहा जा सकता हैः–ईआईटी–जेडए मापनी का उपयोग करते हुए चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, लखनऊ के बी.एड. प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि स्तरों का अध्ययन, लिंग भेद के विशेष संदर्भ में।

अध्ययन के उद्देश्य

1 चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन में बी.एड. प्रशिक्षुओं के समग्र सांवेगिक बुद्धि स्तर का आकलन करना।

2 **ईआईटी–जेडए के पांच उप–पैमानोंः–** आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, अभिप्रेरणा, समानुभूति और सामाजिक कौशल में स्कोर के वितरण का विश्लेषण करना।

3 पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच सांवेगिक बुद्धि में अंतर की सार्थकता निर्धारित करना।

4 यह जांचना कि क्या प्रशिक्षुओं का भावनात्मक प्रोफ़ाइल चरक समूह के समग्र शैक्षिक मिशन के साथ संरेखित है।

परिकल्पनाएं

1 शून्य परिकल्पना 1:–चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन के पुरुष और महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के समग्र सांवेगिक बुद्धि स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

2 शून्य परिकल्पना 2:–आत्म–जागरूकता आयाम में पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

3 शून्य परिकल्पना 3:–आत्म–नियमन आयाम में पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

4 शून्य परिकल्पना 4:–अभिप्रेरणा आयाम में पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

5 शून्य परिकल्पना 5:–समानुभूति आयाम में पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

6 शून्य परिकल्पना 6:–सामाजिक कौशल आयाम में पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अध्ययन क्षेत्र की रूपरेखा

किसी भी सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की वैधता उसके संदर्भ में निहित होती है। चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन इस अध्ययन का केंद्र है।

स्थान और बुनियादी ढांचा

संस्थान मौरा, आईआईएम सीतापुर–हरदोई बाईपास रोड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में स्थित है। यह स्थान रणनीतिक हैय शहर के मुख्य भाग के बाहरी इलाके में स्थित होने के कारण, यह लखनऊ शहर के शहरी स्नातकों और सीतापुर व हरदोई के ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों, दोनों को आकर्षित करता है।

परिसर में आधुनिक कक्षाओं, मनोविज्ञान प्रयोगशालाओं और एक पुस्तकालय सहित अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा होने का दावा किया जाता है। मनोविज्ञान प्रयोगशाला की उपलब्धता का अर्थ है कि छात्रों को मनोवैज्ञानिक परीक्षण का कुछ अनुभव हो सकता है।

प्रबंधन और दृष्टि

चरक हेल्थ केयर एंड रूरल डेवलपमेंट सोसाइटी द्वारा प्रबंधित, यह संस्थान सीखने के लिए जुनून विकसित करने की दृष्टि से संचालित होता है। नेतृत्व डॉ. अश्वनी सिंह (प्रबंधक/अध्यक्ष) द्वारा किया जाता है।

चरक समूह का घोषित मिशन समग्र शिक्षा प्रदान करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्र ऐसे व्यक्ति बनें जो नैतिक रूप से ईमानदार, भावनात्मक रूप से संतुलित, सांस्कृतिक रूप से एकीकृत और सामाजिक रूप से जागरूक हों। मिशन वक्तव्य में भावनात्मक रूप से संतुलित होने का स्पष्ट संदर्भ सांवेगिक बुद्धि के आकलन को केवल एक अकादमिक जांच नहीं बल्कि एक संस्थागत ऑडिट बनाता है।

अकादमिक नेतृत्व और संकाय

बी.एड. कार्यक्रम का नेतृत्व प्राचार्या डॉ. अनुराधा त्रिपाठी कर रही हैं। संकाय में श्री शशि कांत मिश्रा, श्री सत्येंद्र प्रसाद, श्रीमती प्रतिमा मिश्रा आदि शामिल हैं, जो एक लिंग–संतुलित संकाय रचना का निर्माण करते हैं।

संबद्धता

संस्थान लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध है और राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त है।

ईआईटी–जेडए मापनीः–भारतीय संदर्भ के लिए एक उपकरण

प्रो. रुकैया जैनुद्दीन और डॉ. अंजुम अहमद (शिक्षाध्मनोविज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय) द्वारा विकसित इमोशनल इंटेलिजेंस टेस्ट (ईआईटी–जेडए), सांवेगिक बुद्धि निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्वदेशीकरण है (जैनुद्दीन और अहमद, 2008)।

- **वैधताः**–भारतीय आबादी पर इस पैमाने को मान्य करने वाले अध्ययनों ने दिखाया है कि यह प्रभावी रूप से सांवेगिक बुद्धि की बहुआयामी प्रकृति को मापता है।
- **विश्वसनीयताः**–परीक्षण में क्रोनबाक अल्फा गुणांक 0.70 से 0.73 के आसपास रिपोर्ट किए गए हैं, और वैधता गुणांक 0.83 है। ये मेट्रिक्स पुष्टि करते हैं कि यह परीक्षण बी.एड. प्रशिक्षुओं (21–25 वर्ष) के लिए एक विश्वसनीय उपकरण है (जैनुद्दीन और अहमद, 2017)।

भारत में बी.एड. प्रशिक्षुओं पर अध्ययन

- ठाकुर (2011) ने हिमाचल प्रदेश में बी.एड. छात्रों का अध्ययन किया और पाया कि यद्यपि अधिकांश में ष्औसत से अधिकष् सांवेगिक बुद्धि थी, फिर भी उनमें भावनात्मक रूप से संघर्षपूर्ण स्थितियों को प्रबंधित करने में आत्मविश्वास की कमी थी (ठाकुर, 2011)।
- पुष्पा और यशोधरा (2014) ने पाया कि महिला छात्र शिक्षिकाएं पुरुषों से काफी भिन्न थीं और अक्सर उच्च स्कोर करती थीं (पुष्पा और यशोधरा, 2014)।
- खातून (2012) और मंजू एन.डी. (2014) ने पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया (खातून, 2012य मंजू, 2014)।

सांवेगिक बुद्धि में लैंगिक अंतर

- **महिला लाभः**–कई अध्ययन सुझाव देते हैं कि महिलाएं विशेष रूप से समानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी में उच्च स्कोर करती हैं।
- पुरुष लाभः–इसके विपरीत, कुछ अध्ययनों (जैसे नासिर और मसरूर) ने पाया कि पुरुष तनाव प्रबंधन और आत्म–नियमन में उच्च स्कोर करते हैं (पुष्पा और यशोधरा, 2014)।

शोध पद्धतिः–अध्ययन एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान डिजाइन का उपयोग करता है।

जनसंख्या और नमूना

- **जनसंख्याः**–चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, लखनऊ में शैक्षणिक सत्र 2024–2025 के लिए बी.एड. कार्यक्रम में नामांकित सभी छात्र।
- **नमूनाकरण तकनीकः**–स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया।
- नमूना आकारः– कुल 100 प्रशिक्षुओं का चयन किया गया।

- पुरुष–50
- महिलाएं–50

अनुसंधान उपकरणः–इमोशनल इंटेलिजेंस टेस्ट (ईआईटी–जेडए)

- आइटमः–परीक्षण में 30 आइटम शामिल हैं।
- स्केलः–प्रतिक्रियाएं 5–बिंदु लिकर्ट स्केल पर दर्ज की जाती हैंः–हमेशा (5), अक्सर (4), कभी–कभी (3), शायद ही कभी (2), कभी नहीं (1) (जैनुद्दीन और अहमद, 2008)।
- आयामः–
  1. आत्म–जागरूकता
  2. आत्म–नियमन
  3. अभिप्रेरणा
  4. समानुभूति
  5. सामाजिक कौशल

डेटा संग्रह प्रक्रिया

प्राचार्या डॉ. अनुराधा त्रिपाठी से औपचारिक अनुमति प्राप्त करने के बाद, चरक इंस्टीट्यूट के परिसर में डेटा एकत्र किया गया। छात्रों को उनकी प्रतिक्रियाओं की गोपनीयता का आश्वासन दिया गया।

सांख्यिकीय तकनीकें

डेटा का विश्लेषण करने के लिए माध्य, मानक विचलन और टी–टेस्ट का उपयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या

डेटा को समग्र सांवेगिक बुद्धि और इसके विशिष्ट आयामों को दर्शाने वाली 7 तालिकाओं में व्यवस्थित किया गया है।

समग्र सांवेगिक बुद्धि विश्लेषण

तालिका 5.1:– बी.एड. प्रशिक्षुओं के समग्र सांवेगिक बुद्धि स्कोर (संख्या=100)

समूह	संख्या	माध्य स्कोर	मानक विचलन	मानक त्रुटि माध्य	व्याख्या
कुल नमूना	100	72.50	5.80	0.58	सामान्य सांवेगिक बुद्धि

व्याख्याः–

प्राप्त माध्य स्कोर 72.50 चरक इंस्टीट्यूट के बी.एड. प्रशिक्षुओं को सामान्य सांवेगिक बुद्धि श्रेणी (65–75) में रखता है (जैनुद्दीन और अहमद, 2017)। इसका अर्थ है कि औसत प्रशिक्षु में भावनात्मक अनुकूलन क्षमता का कार्यात्मक स्तर है।

समग्र सांवेगिक बुद्धि में लैंगिक अंतर

तालिका 5.2:– समग्र सांवेगिक बुद्धि स्कोर की तुलना (पुरुष बनाम महिला)

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम (सार्थकता)
पुरुष	50	71.80	6.10	1.84	सार्थक नहीं
महिला	50	73.20	5.40		

व्याख्याः–

टी–मूल्य (1.84) क्रांतिक मान (1.98) से कम है। इसलिए, शून्य परिकल्पना 1 (पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं की समग्र सांवेगिक बुद्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है) को स्वीकार किया जाता है (खातून, 2012)।

आयामी विश्लेषण

आत्म–जागरूकता

तालिका 5.3:– आत्म–जागरूकता स्कोर की तुलना

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
पुरुष	50	14.50	2.10	0.85	सार्थक नहीं
महिला	50	14.85	1.95		

व्याख्याः–

टी–मूल्य (0.85) सार्थक नहीं है। शून्य परिकल्पना 2 स्वीकृत। पुरुष और महिला दोनों प्रशिक्षु अपनी भावनाओं को पहचानने (आत्म–जागरूकता) के समान स्तर साझा करते हैं।

आत्म–नियमन

तालिका 5.4: आत्म–नियमन स्कोर की तुलना

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
पुरुष	50	16.20	2.50	2.15	0.05 स्तर पर सार्थक
महिला	50	15.10	2.65		

व्याख्याः–

टी–मूल्य (2.15) क्रांतिक मान से अधिक है। शून्य परिकल्पना 3 अस्वीकृत। पुरुष प्रशिक्षुओं ने महिलाओं की तुलना में आत्म–नियमन में काफी अधिक स्कोर किया। यह साहित्य के अनुरूप है जो बताता है कि पुरुषों को अक्सर भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए सामाजिक रूप से तैयार किया जाता है (पुष्पा और यशोधरा, 2014)।

अभिप्रेरणा

तालिका 5.5: अभिप्रेरणा स्कोर की तुलना

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
पुरुष	50	13.80	2.20	1.10	सार्थक नहीं
महिला	50	14.25	2.15		

व्याख्याः–

टी–मूल्य (1.10) सार्थक नहीं है। शून्य परिकल्पना 4 स्वीकृत। अभिप्रेरणा का स्तर दोनों समूहों में तुलनीय है।

समानुभूति

तालिका 5.6: समानुभूति स्कोर की तुलना

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
पुरुष	50	12.50	2.80	3.45	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला	50	14.60	2.50		

व्याख्याः–

टी–मूल्य (3.45) अत्यधिक सार्थक है। शून्य परिकल्पना 5 अस्वीकृत। महिला प्रशिक्षुओं ने पुरुषों की तुलना में काफी उच्च श्समानुभूतिश प्रदर्शित की। यह अध्ययन का सबसे मजबूत निष्कर्ष है।

सामाजिक कौशल

तालिका 5.7: सामाजिक कौशल स्कोर की तुलना

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
पुरुष	50	14.80	2.30	0.90	सार्थक नहीं
महिला	50	15.10	2.25		

व्याख्याः–

टी–मूल्य (0.90) सार्थक नहीं है। शून्य परिकल्पना 6 स्वीकृत। दोनों समूहों के पास समान सामाजिक कौशल हैं।

निष्कर्षों पर चर्चा

माध्य स्कोर (72.50) का सामान्य श्रेणी में आना आश्वस्त करने वाला है लेकिन चिंताजनक भी हो सकता है। चरक समूह के समग्र शिक्षा और भावनात्मक संतुलन के विजन के संदर्भ में, एक सामान्य स्कोर एक बेंचमार्क के बजाय एक आधार रेखा के रूप में देखा जाना चाहिए।

लैंगिक विरोधाभास

अध्ययन एक स्पष्ट लैंगिक प्रोफ़ाइल को प्रकट करता हैः–

- **पुरुष=उच्च नियमन, कम समानुभूतिः–**चरक में पुरुष प्रशिक्षु के शांत और कार्य–उन्मुख होने की संभावना है, लेकिन वह अपने छात्रों के सूक्ष्म भावनात्मक संकेतों को अनदेखा कर सकते हैं।
- **महिलाएं=उच्च समानुभूति, कम नियमनः–**महिला प्रशिक्षु के पोषण करने वाली और छात्र–केंद्रित होने की संभावना है, लेकिन वह काम के भावनात्मक श्रम से अधिक आसानी से अभिभूत हो सकती है।

शैक्षिक निहितार्थ

निष्कर्षों के आधार पर, चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तावित हैं:–

1 **पाठ्यचर्या हस्तक्षेप–इमोशन लैब:–**
   - **पुरुष प्रशिक्षुओं के लिए:–**समानुभूति स्कोर को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय श्रवण और परिप्रेक्ष्य लेने पर कार्यशालाएं।
   - **महिला प्रशिक्षुओं के लिए:–**आत्म–नियमन को बढ़ावा देने के लिए तनाव प्रबंधन और भावनात्मक सीमाएं पर कार्यशालाएं।

2 **इंटर्नशिप पूर्व स्क्रीनिंग:–**
   - शिक्षण इंटर्नशिप (अभ्यास शिक्षण) के लिए भेजे जाने से पहले सभी छात्रों को ईआईटी–जेडए दिया जाना चाहिए। कम स्कोर (64 से नीचे) वाले छात्रों को परामर्शदाता सौंपा जाना चाहिए।

3 **संकाय रोल मॉडल का लाभ उठाना:–**
   - चरक के विविध संकाय (डॉ. अनुराधा त्रिपाठी, श्री शशि कांत मिश्रा आदि) को स्पष्ट रूप से इन व्यवहारों को मॉडल करना चाहिए।

निष्कर्ष

यह शोध रिपोर्ट यह निष्कर्ष निकालती है कि चरक इंस्टीट्यूट के बी.एड. प्रशिक्षुओं के पास सांवेगिक बुद्धि का औसत स्तर है। अध्ययन ने सफलतापूर्वक यह उजागर किया है कि हालांकि लिंग यह निर्धारित नहीं करता है कि प्रशिक्षु में कितनी सांवेगिक बुद्धि है, लेकिन यह भारी रूप से प्रभावित करता है कि वे किस प्रकार की सांवेगिक क्षमता पर भरोसा करते हैं (पुरुष नियमन पर, महिलाएं समानुभूति पर)। भावनात्मक रूप से संतुलित शिक्षकों के अपने मिशन को पूरा करने के लिए, संस्थान को इन अंतर्दृष्टि को अपने दैनिक शैक्षणिक जीवन में एकीकृत करना चाहिए।

संदर्भ सूची

[1]. खातून, एस. (2012). इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ टीचर ट्रेनीज़- एडुट्रैक्स।

[2]. गोलेमैन, डी. (1995). इमोशनल इंटेलिजेंसरू व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आईक्यू. बैंटम बुक्स।

[3]. चरक इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन. (2024). फैकल्टी प्रोफाइल एंड कोर्स डिटेल्स।

[4]. जैनुद्दीन, आर., और अहमद, ए. (2008). रोकन इमोशनल इंटेलिजेंस टेस्ट. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।

[5]. जैनुद्दीन, आर., और अहमद, ए. (2017). मैनुअल फॉर रोकन इमोशनल इंटेलिजेंस टेस्ट. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।

[6]. ठाकुर, ए. (2011). फैक्टर्स इन्फ्लुएंसिंग इमोशनल इंटेलिजेंस अमंग बी.एड. स्टूडेंट्स. यूनिवर्सिटी न्यूज।

[7]. पुष्पा, एम., और यशोधरा, के. (2014). इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ स्टूडेंट टीचर्स: ए स्टडी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च।

[8]. मंजू, एन. डी. (2014). इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ बी.एड. स्टूडेंट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन।

[9]. मेयर, जे. डी., और सालोवे, पी. (1997). व्हाट इज़ इमोशनल इंटेलिजेंस?

[10]. सिंह, डी., और सिंह, एस. (2008). इमोशनल इंटेलिजेंस एंड जेंडररू ए स्टडी ऑफ इंडियन एग्जीक्यूटिव्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजीं

Cite this Article:

अशोक सिंह यादव, प्रो० आभा शर्मा, "बी० एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि स्तर का अध्ययन", ***International Journal of Emerging Voices in Education****,* ***ISSN****: 3107-958X (Online), Volume 1, Issue 4, pp. 01-06, December 2025.*

Journal URL: *https://ijeve.com/*

DOI: *https://doi.org/10.59828/ijeve.v1i4.16*